"परम गुरुभ्यो नमः"

अथर्ववेदीय ज्यौतिषम्

(वेदाङ्गम्)

काश्यप–प्रजापति-संवादेन प्रोक्तम्

●

Rs 15—

अनुवादक :

श्री पं० छोटेलाल शर्मा

'शास्त्री', साहित्यरत्न, एम. ए. (इङ्गलिश) एम. ए. (हिन्दी)

श्री पं० ओंनारायण द्विवेदी

'व्याकरणाचार्य'

●

श्री पीताम्बरा पीठ

दतिया (म. प्र.)

"परम गुरुभ्यो नमः"

अथर्ववेदीय ज्यौतिषम्

(वेदाङ्गम्)

काश्यप - प्रजापति-संवादेन प्रोक्तम्

अनुवादकः

पं. श्री छोटेलाल शर्मा

'शास्त्री', साहित्यरत्न, एम.ए. (इङ्गिलिश) एम.ए. (हिन्दी)

श्री पं. ओंनारायण द्विवेदी

'व्याकरणाचार्य'

श्री पीताम्बरा पीठ

दतिया (म.प्र.)

प्रकाशक	**श्री पीताम्बरापीठ** दतिया (म.प्र.)
अधिकार	सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
आवृत्ति	तृतीय ३००० ७ दिसम्बर २००० (मोक्षदा एकादशी)
मूल्य	दस रुपया मात्र
मुद्रक	**शिवशक्ति प्रेस, प्रा.लि.** नयागांव, ग्वालियर रोड झाँसी (उ.प्र.)

प्रकाशकीय

भगवती पीताम्बरा की कृपा से आज यह पुस्तक ''अथर्ववेदीय ज्योतिष'' का प्रकाशन तृतीयावृत्ति के रूप में प्रस्तुत करते हुए पीठ प्रमुदित है। तांत्रिक कृत्यों का समारम्भ प्रस्तुत ग्रन्थ में दिये गये मुहूर्तों के अनुसार ही करना चाहिए, तभी कार्य सिद्धि संभव है।

अनन्त श्री विभूषित राष्ट्र गुरु पूज्यपाद स्वामी जी महाराज द्वारा लिखित भूमिका से प्रकाशन अत्यधिक गरिमायुक्त है।

दिनांक ७ दिसम्बर २०००
(मोक्षदा एकादशी)

मंत्री
श्री पीताम्बरा पीठ
दतिया (म.प्र.)

जिससे ग्रन्थ के मूल रूप का परिचय न होने से अध्ययन करने वालों के लिये जिज्ञासा की अतृप्ति बनी ही रहती है।

ग्वालियर के स्व. श्री विष्णु भट्ट गोरे, जो कि अथर्ववेदीय विद्वान थे, उनके पास से यह अथर्व वेदाङ्ग ज्योतिष ग्रन्थ लिखित रूप में प्राप्त करके हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित करने की इच्छा से श्री पं. छोटेलाल मिश्र शास्त्री एम.ए. तथा श्री पं. ओंनारायण द्विवेदी व्याकरणाचार्य द्वारा कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया जा रहा है।

यह ग्रन्थ 162 श्लोकों तथा 166 श्लोकों में है। इस प्रकार द्विविध पाठों में उपलब्ध है। दीक्षित जी ने 162 वाले पाठ का उल्लेख किया है जिसका विषय क्रम निम्न प्रकार है -

श्लोक सं0 2 से 11 तक काल परिमाण निर्णय एवं मुहूर्त विवरण

" " १२ " २९ तक मुहूर्तों का शुभाशुभ फल

" " ३० " ५८ करण का निरूपण एवं उसके शुभाशुभ फल

" " ६० " ६५ तक तिथियों के अनुसार यात्रा करने का फल

" " ६६ " ७६,, तिथि संज्ञा तथा उनके फलादेश

" " ९३ " १००,, वारों के अनुसार कार्यों का निरूपण

श्लोक सं. १०२ से लेकर ११० तक नक्षत्रों की संज्ञा तथा उनका वर्गीकरण

" " १११ " १२९,, नक्षत्रों के अनुसार गणों का निरूपण

एवं उनका शुभाशुभ फल

" " १३० " १५६,, रजस्वला एवं गर्भाधान सम्बन्धी तिथियों का शुभाशुभ परिणाम

उपर्युक्त विषय वर्तमान फलित ज्यौतिष के अंतर्गत भी पाये जाते हैं। इनमें विशेष अन्तर नहीं है। जिस प्रकार वेदाङ्ग ज्यौतिष (ऋग्वेद, यजुर्वेद) में मीन, मेष आदि द्वादश राशियों का नामोल्लेख नहीं है, इसी प्रकार इस वेदाङ्ग ज्योतिष में भी नहीं है। नक्षत्रों का कृतिका आदि नाम इस वेदाङ्ग ज्योतिष में नही दिया गया है। केवल नक्षत्रों के नौ भेद (तीन-तीन नक्षत्रों का एक-एक वर्ग बनाते हुए) का उल्लेख किया गया है। वैदिक काल के नक्षत्रों की गणना कृतिका नक्षत्र से ही आरम्भ होती है, जो अथर्ववेद के निम्न मंत्र से सिद्ध है।

"सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा।
पुनर्वसु सुनृताचारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघामे"
(काण्ड १९ / सू0 ७ ! मंच २)

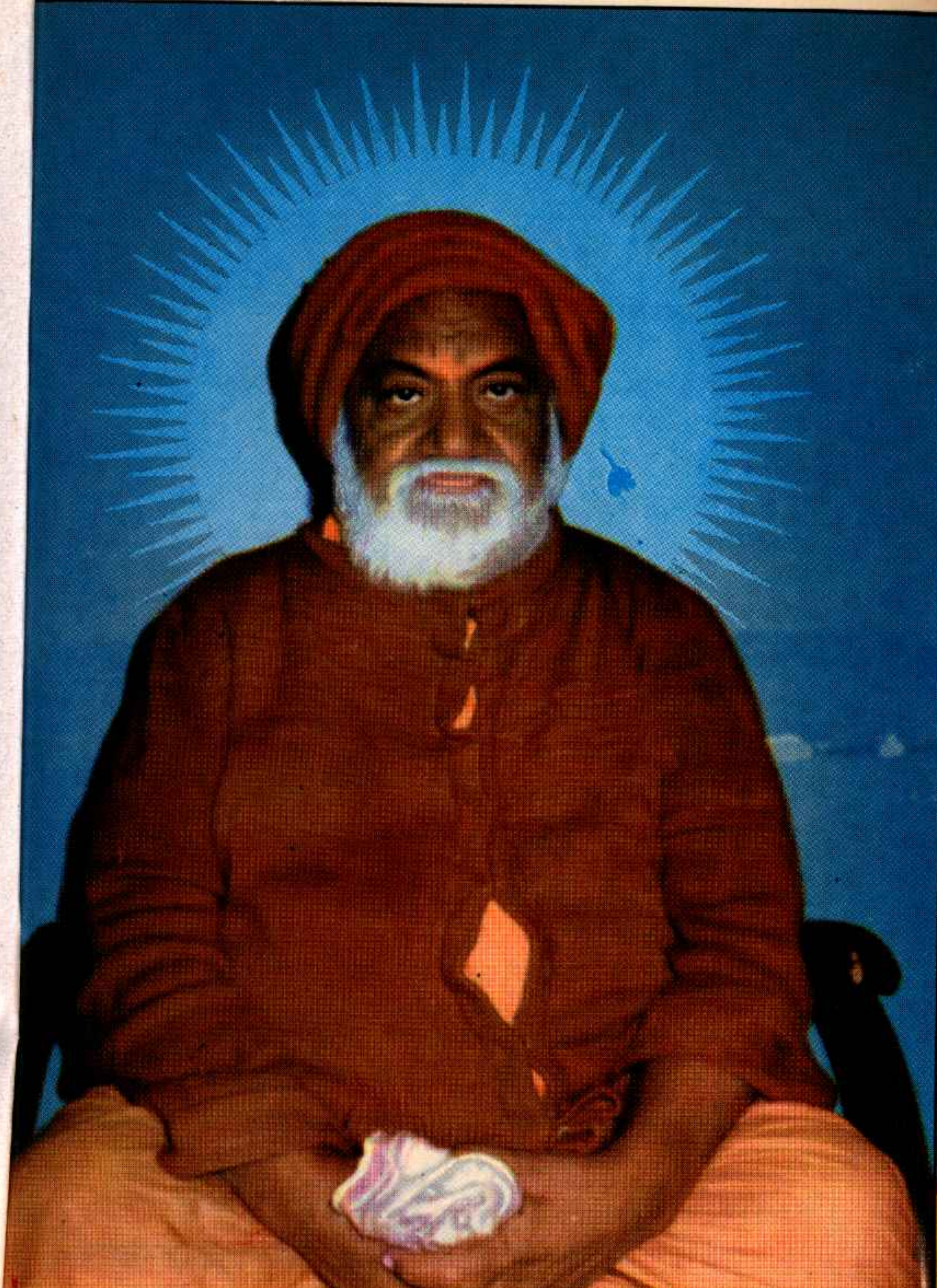
वेद वेदाङ्ग में भी यही क्रम है। वैदिक मत से आश्लेषा नक्षत्र से दक्षिणायन एवं श्रविष्ठा (घनिष्ठा) नक्षत्र से उत्तरायण आरम्भ होते हैं जो कि मंत्र के "भानुराश्लेषा अयनं मघामे" से सिद्ध है।

यद्यपि इस ग्रन्थ में ऐसा कोई वाक्य नहीं आया है कि यह वेदांग ज्योतिष अथर्ववेद का अंग है, तथापि अन्तिम श्लोक के 'आम्नाय विधिदर्शनात्' इस वाक्य से स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ अथर्ववेद का ही अंग है। अब अन्त में यह आशा करता हूं कि विद्वद्वर्ग इस ग्रन्थ का अध्ययन कर यथार्थ लाभ उठायेंगे।

इसकी शुद्ध प्रति तैयार करने का श्रम धौलपुर निवासी पंडित पूर्णप्रताप जोशी जी ने किया है तदर्थ आपको धन्यवाद।

श्री पीताम्बरापीठ
दतिया (म.प्र.)
२६-१-८५ ई.

– परमपूज्य राष्ट्रगुरु
श्री १००८ श्री स्वामीजी महाराज



ब्रह्मलीन

श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

श्री गणेशाय नमः

अथर्ववेदीय ज्यौतिषम्

काश्यप-प्रजापति संवादेन प्रोक्तम्

काल परिमाण-निर्णय एवं मुहूर्त-विवरण

(१)

अथ ब्रह्माणं स्वयंभुं (वं) गुरुं लोक पितामहम्।
ब्रह्मलोके सुखासीनं काश्यपः परिपृच्छति ।१।

भावार्थ- ब्रह्मलोक में सुख पूर्वक बैठे हुए, स्वयंभु एवं समस्त संसार के गुरु ब्रह्मा जी से काश्यप ऋषि ने प्रश्न किया।

(२)

किं प्रमाणं मुहूर्तानां रात्रौ वा यदिवा दिवा।
चन्द्रादित्य गतं सर्व, तन्मे प्रब्रूहि पृच्छतः ।२।

भावार्थ- हे पितामह! रात्रि अथवा दिन में चंद्र और सूर्य से क्रमशः संबंधित मुहूर्तों का क्या कारण है, कृपया कहें।

(३)

तस्य सुश्रूषमाणस्य काश्यपस्य महात्मनः।
प्रोवाच भगवान् सर्व मुहूर्तज्ञानमुत्तमम् ।३।

भावार्थ- इस प्रकार महात्मा काश्यप के सानुनय पूंछने पर ब्रह्माजी ने सर्व प्रकार के श्रेष्ठ मुहूर्तों का वर्णन किया।

(४)

द्वादशाक्षि निमेषस्तु लवो नामाभिधीयते।
लवस्त्रिंशत् कलाज्ञेया कलात्रिंशत् त्रुटिर्भवेत् ।४।

भावार्थ- अब सर्वप्रथम समय का प्रमाण बतलाया जा रहा है:- कि एक आंख के पलक को बारह बार गिराने में अर्थात् नेत्र बंद करने में, जितना समय लगता है उसको एक लव कहते हैं। तथा तीस लव (360 बार पलक झपकने में जितना समय लगता है) की एक कला होती है और तीस कला की एक त्रुटि होती है।

(५)

त्रुटीनांतु भवेत् त्रिशन्मुहूर्तस्य प्रयोजनम्।
द्वादशांगुलमुच्छेषं तस्य छाया प्रमाणतः ।५।

भावार्थ- तीस त्रुटियों का एक मुहूर्त होता है जिसका ज्ञान, बारह अंगुल की एक लकड़ी को समतल भूमि पर खड़ी गाड़कर उसकी छाया के माप के अनुसार होता है, जिसका वर्णन आगे किया जा रहा है।

(६)

नवति षडंगुलाश्चैव प्रतीचीं तां प्रकाशयेत्।
पुरस्तात् सन्धि वेलायाँ मुहूर्तो रौद्रउच्यते ।६।

भावार्थ- प्रातःकाल सूर्योदय की सन्धि वेला में उस लकड़ी की छाया पश्चिम दिशा की ओर 96 अंगुल की होगी और धीरे-धीरे जब यह छाया 61 अंगुल की हो जावे तब तक रौद्र नाम का मुहूर्त होता है।

(७)

श्वेतः षष्टिः समाख्यातो मैत्रोवै द्वादशांगुलः।
षट् सुसारभटोज्ञेयः सावित्रः पञ्चसुस्मृतः ।७।

भावार्थ- जब 60 (साठ) अंगुल से लेकर १३ अंगुल की छाया

रहे तब 'श्वेत' नाम का मुहूर्त, बारह से सात अंगुल तक 'मैत्र' नाम मुहूर्त, छः अंगुल छाया पर 'सारभट' नाम का मुहूर्त और पांच अंगुल छाया पर 'सावित्र' नाम का मुहूर्त समझना चाहिये।

(८)

चतुर्षु चैव वैराजस्त्रिषु विश्वावसुस्तथा।
मध्याह्नेचाभिजिन्नाम यस्मिन् छाया प्रतिष्ठति ।८।

भावार्थ- चार अंगुल की छाया पर 'वैराज' नाम का मुहूर्त, तीन अंगुल पर 'विश्वावसु' और मध्याह्न में जबकि छाया उस लकड़ी के मूल में स्थित हो जाती है उस समय 'अभिजित' नाम का मुहूर्त होता है।

(९)

प्राचीं वैनामिनीं छायां रौहिणस्त्रिषु वर्तते।
बलश्चतुर्षु विख्यातो विजयः पञ्चसु स्मृतः ।९।

भावार्थ- और जब पश्चिम दिशा में लौट कर सायंकाल के समय छाया पूर्व को जायेगी उस समय तीन अंगुल की छाया तक 'रोहिण' नाम का मुहूर्त, चार अंगुल की छाया तक 'बल' नाम का मुहूर्त और पांच अंगुल की छाया तक 'विजय' नाम का मुहूर्त जानना चाहिये।

(१०)

नैऋतस्तु षडंगुल्यो वारुणो द्वादशांगुलः।
सौम्यः षष्ठिः समाख्यातो भगस्तु परमस्तथा ।१०।

भावार्थ- इसके पश्चात् छः अंगुल छाया तक 'नैर्ऋत' नाम का मुहूर्त, बारह अंगुल तक 'वारुण', बारह से आठ अंगुल की छाया तक ''सौम्य' और ६० अंगुल छाया से ९६ तक अर्थात् सूर्यास्त

पर्यन्त 'भग' नामक मुहूर्त होता है।

(११)

ऐते मुहूर्ता व्याख्याता दशद्वौच तथा त्रयः।
अहन्येव तु विज्ञेया रात्रावपि न संशयः ।११।

भावार्थ- अब तक प्रातःकाल से सूर्यास्त पर्यन्त रौद्रादि 15 मुहूर्त बतलाये गये और उस दिन के क्रम के अनुसार ही रात्रि में भी शंकु छाया के अनुताप से इन्हीं मुहूर्तों को यथाक्रम समझना चाहिये। अर्थात् दिन की भांति रात्रि में भी 15 मुहूर्त होते हैं।

मुहूर्तों का शुभाशुभ फल

(१२)

अत ऊर्ध्वंतु सर्वेषांमानुपूर्व्याच्छुभा शुभम्।
सर्व विस्तरशस्ताँश्च तन्मे निगदितः श्रृणु ।१२।

भावार्थ- अब इसके पश्चात् इन १५ मुहूर्तों के शुभ और अशुभ फल को विस्तार पूर्वक एवं क्रमशः कहता हूं आप सुनिये।

(१३)

रौद्रे रौद्राणि कुर्वीत रुद्र कार्याणि नित्यशः।
यच्चरौद्रं भवेत् किञ्चित् सर्वमेतेन कारयेत् ।१।

भावार्थ- जब कभी भी रुद्र कार्य अर्थात् मारणादि प्रयोग करने हों तब रौद्र नामक मुहूर्त में ही करना चाहिये, क्योंकि सभी प्रकार के भयंकर कार्यों की सफलता रौद्र नामक मुहूर्त में ही होती है।

(१४)

श्वेते वासश्च स्नानं च ग्रामोद्यानं तथा कृषिः।
आरम्भाश्चात्रसिद्ध्यन्तियेचार्थाश्चिन्तिताः क्वचित् ।२।

भावार्थ- श्वेत नामक मुहूर्त में नवीन वस्त्र धारण करना, स्नान

करना, ग्राम बसाना या बगीचा लगाना, कृषि कार्य का आरंभ करना तथा इसी प्रकार के अन्य सोचे हुये कार्य भी सिद्ध होते हैं।

(१५)

मैत्रे मैत्रणि कुर्वीत मित्रकार्याणि नित्यशः।
पञ्चमैत्रं भवेत् किञ्चित् सर्वमेतेन कारयेत् ।३।

भावार्थ- मित्रता, सन्धि, एवं मेल-मिलाप संबंधी सब प्रकार के कार्यों के लिये मैत्र नामक मुहूर्त शुभ एवं प्रशस्त कहा गया है।

(१६)

अभिचारंतु शत्रूणां कुर्यात् सारभटे न तु।
आत्मार्थे सुहृदर्थे वा नश्यंते तस्य शत्रवः ।४।

भावार्थ- अपने अथवा अपने मित्रों के शत्रुओं को नष्ट करना हो या शत्रुओं के लिये कोई अभिचार कर्म अर्थात् मारणादि प्रयोग करना हो तो 'सारभट' नामक मुहूर्त में करने से अवश्य सफल होता है।

(१७)

सावित्रेण मुहूर्तेन देव कार्याणि कारयेत्।
यज्ञन्विवाहानु द्वाहांश्चूडोपनयनानि च ।५।

भावार्थ- सब प्रकार के यज्ञ, सभी प्रकार के विवाह, चूड़ा कर्म और उपनयन आदि संस्कार तथा इसी प्रकार के अन्य देव कार्य जब करने हों तो 'सावित्र' नामक मुहूर्त में करने चाहिये।

(१८)

वैराजेन मुहूर्तेन राजा पौरूषमारभेत्।

मेर्माणि पट दानानि शस्त्र कर्मच कारयेत् ।६।

भावार्थ- जब राजाओं को पराक्रम के कार्य आरंभ करने हो, धारण करना हो, वस्त्रों का दान करना हो अथवा शस्त्रों का निर्माण कराना हो तब 'वैराज' नामक मुहूर्त में ही करना चाहिये।

(१९)

विश्वावसौतु सवर्वार्थानारम्भाश्चात्र कारयेत्।
सर्वेषां च द्विजातीनां स्वाध्यायोऽत्र प्रशस्यते ।७।

भावार्थ- विश्वावसु मुहूर्त में सभी प्रकार के अर्थ सिद्धि के कार्य और द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) के स्वाध्याय संबंधी सभी कार्य प्रारंभ होने चाहिये।

(२०)

ब्रह्म क्षत्रिय वैश्यानां शूद्राणां चापि नित्यशः।
सर्वेषामेव वर्णानां योगो मध्यं दिनेऽभिजित् ।८।

भावार्थ- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रादि सभी वर्णों के मेल-मिलाप के लिये मध्याह्न में आने वाला 'अभिजित्' नाम का मुहुर्त श्रेष्ठ होता है।

(२१)

अभिजित्सर्वकामाय सर्वकामार्थसाधनः।
अर्थ सञ्चय मानानामध्वानं गन्तुमिच्छताम् ।९।

भावार्थ- अभिजित नामक मुहुर्त सब प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। तथा यही मुहुर्त धन-संग्रह करने वाले या किसी प्रकार की यात्रा करने वाले व्यक्तियों को अवश्य सफलता देता है।

(२२)

रौहिणेवापिता वृक्षा विल्व गुल्म लतास्तथा।
अरोगाः पुष्पवन्तश्च फलवन्तश्च नित्यशः ।१०।

भावार्थ- रौहिण नामक मुहूर्त में लगाये गये वृक्ष, बेल तथा लतायें निरोग होती हैं और उन पर सर्वदा ही, सुंदर फल व फूल लगे रहते हैं।

(२३)

वलेन तु वलं राजा स्वयमारुह्य योजयेत्।
योगः सम्पत्तितं कार्य शत्रूश्च वषमेजयेत् ।११।

भावार्थ- बल नामक मुहूर्त में राजाओं को स्वयं ही सेना का संचालन करना चाहिये और इसी मुहूर्त में शत्रु की सेना पर आक्रमण करने से विजय अवश्य प्राप्त होती है।

(२४)

विजये न प्रयातस्य विजयो नात्र संशयः।
मंगलान्यत्र कुर्वीत शान्ति स्वस्त्ययनानिच ।१।

भावार्थ- विजय नामक मुहूर्त में चढ़ाई करने से अवश्य विजय प्राप्त होती है और स्वस्ति वाचन तथा शान्ति पाठ आदि मंगलाचार कार्यों के लिए भी यह मुहूर्त प्रशस्त है।

(२५)

नैर्ऋते घातयेत्सेनां परराष्ट्रं तु मर्दयेत्।
कर्त्तुः सम्पत्करो ह्येषः सर्व शत्रु निवर्हणः ।२।

भावार्थ- नैर्ऋत नामक मुहूर्त में शत्रुओं के राष्ट्रों पर आक्रमण करके उनकी संपूर्ण सेना को नष्ट किया जा सकता है और पराजित शत्रु की सम्पत्ति भी इसी मुहूर्त में आक्रमण करने से प्राप्त होती है।

(२६)

वारुणेन मुहूर्तेन वारुणानि प्रवापयेत्।
गोधूमान्यव शालींश्चरण कांश्चोत्पलानिच ।३।

भावार्थ- वारुण नामक मुहूर्त में जल में उत्पन्न होने वाले धान्य, गेहूं, जौ, चावल, चना तथा कमलों के बीजादि पदार्थों को बोना शुभ होता है।

(२७)

सौम्ये सौम्यानि कुर्वीत सौम्य कार्याणि नियशः।
यच्च सौम्यंभवेत्किञ्चित् सर्वमेतेन कारयेत् ।४।

भावार्थ- जितने भी शुभ कार्य हैं उनको यदि सौम्य नामक योग में प्रारंभ किया जावे तो सर्वदा ही सफलता मिलेगी।

(२८)

सर्वासामिव नारीणां कन्यानां च विशेषतः।
सौभाग्यानि प्रयुज्जीत भगे भीम पराक्रमे ।५।

भावार्थ- भग नामक शुभ मुहूर्त में सभी स्त्रियों के और विशेष कर कन्याओं के सौभाग्य कार्य अर्थात् पाणिग्रहण संस्कार आदि शुभ कार्य करने चाहिये।

(२९)

भगेन वरयेत्कन्यां ब्राह्मणीं कुल वर्धिनीं।
भगेन वरिता कन्या नैव सान्यत्र गच्छति ।६।

भावार्थ- भग नामक मुहूर्त में ब्राह्मण की कन्या का विवाह करने से कुल की बृद्धि होती है और वह कन्या पति को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाती है।

करण-निरूपण एवं उसका शुभाशुभ फल

(३०)

शुक्ल प्रतिपदि रात्रौ दिविपंचम्यां तथाष्टमी रात्रौ।
द्वादश्यामपि दिवा प्रथमं प्रतिपद्यते करणम् ।१।

भावार्थ- शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को रात्रि में और पंचमी को दिन में, अष्टमी को रात्रि में और द्वादशी को भी दिन में प्रथम करण अर्थात् "वव" नाम का करण होता है।

(३१)

पौर्णमास्यां ववं रात्रौ तच्चतुर्थी पुर्नदिवा।
तद्धि तत्सप्तमी रात्रौ तच्चैवैकादशीं दिवा ।२।

भावार्थ- पूर्णमासी की रात्रि में, चतुर्थी को दिन में सप्तमी को रात्रि में और एकादशी को दिन में वही प्रथम करण अर्थात् "वव" नाम का करण होता है।

नोट - किस तिथि को कौन करण होता है इसकी विधि निम्न लिखित श्लोक से जानी जा सकती है -

सातिर्थिद्विगुणी कृत्य हीनमेकन्तुकारयेत्।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते।

भावार्थ - जिस तिथि में करण देखना हो उस तिथि को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनकर जो संख्या आवे उसे दूना करके फिर उसमें एक (१) घटा दें, जो शेष बचे उसमें सात का (7) का भाग देना चाहिए। भाग देने पर जो शेष बचे उसकी "वव" से "विष्टि" पर्यन्त करणों को क्रमशः जानना।

(३२)

शुभाशुभ निवद्धानि करणानि निवोधतः।
तानि तत्वेन विज्ञाय नापदं प्राप्नुयान्नरः ।३।

भावार्थ - शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल को देने वाले करणों को भली प्रकार जानने वाले व्यक्ति कभी भी आपत्ति को प्राप्त नहीं होंगे।

(३३)

एकादशाभि: करणौ मसि: संप्रतिपद्यते।
ध्रुवाणि तत्र चत्वारि चराण्यन्यानि सप्तच ।४।

भावार्थ - एक मास में केवल ग्यारह करण होते हैं, उनमें से सात 'चर' संज्ञा वाले और चार 'ध्रुव' संज्ञा वाले होते हैं।

(३४)

ववंच वालवं चैव कौलवं तैतिलेति च।
गराजिर्वणिजं चैव विष्टिर्भवति सप्तमम्।५।

भावार्थ - 'वव', 'वालव', 'कौलव', 'तैतिल', 'गर', 'वणिज' और 'विष्टि' ये सात चर संज्ञा वाले करण होते हैं।

(३५)

शकुनिं चतुष्पदं नागं चतुर्थ कोस्तुभं भवेत्।
एकैकस्यतु यत्कर्म तद्वक्ष्यामि पृथक पृथक।6।

भावार्थ - 'शकुनि', 'चतुष्पद', 'नाग' और 'कौस्तुभ' इन चार करणों की ध्रुव संज्ञा है और अब सभी करणों के कार्यों को अलग अलग करके बतलाया जायेगा, अर्थात् किस करण में क्या कार्य करना चाहिए इत्यादि।

नोट - आधुनिक ज्योतिष ग्रन्थों में 'कौस्तुभ' के स्थान पर 'किस्तुघ्न नाम मिलता है।

(३६)

आद्यतु शकुनि नाम रात्रौ कृष्ण चतुर्दर्शीं।

आधाने हरणे चैव तथैवच पलायने ।७।
श्रुत्यानामथ योधानां पक्षिणां गृहयोषणे।
चिकित्सायां तु पुच्छेच सर्वत्रैतत्प्रशस्यते ।८।

भावार्थ - जब कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शकुनि नामक करण हो उस रात्रि में किसी वस्तु का धारण करना, चोरी करना, योधा या शत्रुओं को भगाना, पक्षियों का पालना, औषधि करना और युद्ध सम्बन्धी सभी कार्य करना श्रेष्ठ होता है।

(३७)

भूततंत्र वलिंदद्याच्छत्रूणां परघातकम्।
करणं चतुष्पदं नाम कृष्ण पञ्चदर्शी दिवा ।९।

भावार्थ - अमावस्या को दिन में जब चतुष्पद नाम का करण हो तब तांत्रिक विधि से भूतों को बलिदान करके शत्रुओं को नष्ट करना चाहिए।

(३८)

चतुष्पदानां सर्वेषांहितं सर्वेषु कर्म सु।
श्राद्धमत्र च कुर्वीत प्रयतश्च भवेन्नरः ।१०।

भावार्थ - चतुष्पद नामक करण में चौपायों से सम्बन्धित सभी कार्य हितकारी होते हैं और इसी करण में यदि श्राद्ध भी किया जावे तो अधिक फल का देने वाला होता है।

(३९)

सोदकानिच कार्याणि सर्वाण्येवा त्र कारयेत्
कृष्णपञ्चदर्शीं रात्रौ नागकरणमुच्यते ।११।

भावार्थ - तर्पणादि जलदान के सभी कार्य चतुष्पद नामक करण में ही करने चाहिये। अब जिस दिन अमावस्या को रात्रि में नाग

करण आवे उस रात्रि में क्या क्या कार्य करना श्रेष्ठ होता है यह बतलाया जा रहा है।

(४०)

नष्टं दष्टं तथा बद्धं तदन्तमिति निर्दिशेत्।
यानि प्रसह्य कार्याणि प्रमथ्य हरणानिच।
तानि नागे प्रयुक्तानि सिद्धयन्ति फलवन्ति च ।१२।

भावार्थ - विनाश करना, काटना, बंधन में डालना, किसी की समाप्ति करना और बलपूर्वक अपहरण करना आदि कार्य करना हो तो 'नाग' नामक करण में करने से अवश्य सिद्ध एवं फलीभूत होते हैं।

(४१)

शुक्ल प्रतिपदि दिवा कौस्तुभं करणं भवेत्।
वैश्वदेवमिति ख्यातं प्रशस्तं सर्व कर्मसु ।१।

भावार्थ - शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को जब दिन में 'कौस्तुभ' (किंस्तुघ्न) नामक करण हो तब उस दिन वैश्वदेव नमाक शुभ योग बनता है जो सब कार्यों के करने के लिये श्रेष्ठ माना गया है।

(४२)

ववेन ध्रुव कर्माणि क्षिप्राण्यपिच कारयेत्।
प्रस्थानेच प्रवेशेच तद्धि सर्वार्थ साधकम् ।२।

भावार्थ - 'वव' नामक करण में ध्रुव (स्थिर) एवं क्षिप्र (चर) दोनों प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं और इसी करण में प्रस्थान एवं प्रवेशादि कार्य करना भी शुभ माना गया है।

(४३)

वालवं ब्राह्मणानांतु सर्वारम्भेषु शोभनम्।
चूड़ोपनयने यज्ञे विवाहे भूति कर्मसु ।३।

भावार्थ - 'वालव' नामक करण में ब्राह्मणों के चूड़ा कर्म, यज्ञोपवीत संस्कार, यज्ञ एवं विवाहादि सभी शुभ कार्य श्रेष्ठ होते हैं। शेष तीनों वर्णों के शुभ कार्यों के लिये 'वालव' करण निषिद्ध है। (त्रयाणामपि वर्णानामनारम्भो विधीयते)

(४४)

अन्यत्र शोभने राज्ये शान्तिकं पौष्टिकं प्रति।
राजद्वारिकामारम्भं कारयेत् तैतिले दिने ।४।

भावार्थ - 'तैतिल' करण में राजद्वार सम्बन्धी कार्यों का आरम्भ तथा शान्ति एवं पौष्टिक कर्म भी करना शुभ होता है।

(४५)

मैत्र युक्तंतुयत्कर्म यच्चस्यात्सिद्धि कारकम्।
स्थावराणि च कार्याणि कौलवे तानि कारयेत् ।५।

भावार्थ - मित्रता सम्बन्धी कार्य एवं सभी स्थिर कार्य 'कौलव' नामक करण में करने से सिद्धि के देने वाले होते हैं।

(४६)

राजद्वारिकमारम्भं कारयेत्तौतिले दिने।
एतद्धि करणं श्रेष्ठं नित्यं राज्ञोपसेविनाम् ।६।

भावार्थ - राज-द्वार का निर्माण, राजद्वार सम्बन्धी अन्य कार्य एवं राजा की सेवा करने वालों के लिए भी यह 'तैतिल' नामक करण शुभ होता है।

(४७)

अलंकारांश्च विविधान् दिव्यान्याभरणानि च।
अन्यच्चापि तथा युक्त युक्तानान्तु पथिक्रिया ।७।

भावार्थ - अनेक प्रकार के सुन्दर आभूषण एवं गहनों का निर्माण कराना और भी इसी प्रकार के शुभ कार्य करना तथा यात्रा आदि के लिये 'तैतिल' नामक करण शुभ है।

(४८)

गराजिनान्तु कुर्वीत यत्कर्म गृह मेधिनां।
पशूनां पोषणं चैव प्रयोज्यम् क्रय विक्रयम् ।८।

भावार्थ - 'गर' नामक करण में गृहस्थों को पशुओं का पालन करना और उनका क्रय विक्रय करना भी शुभ होता है।

(४९)

गृह प्रवेशं वास्तूनां रोपणानि च।
विशोषेणतु कार्याणि कर्षणादीनि कारयेत् ।९।

भावार्थ : 'गर' नामक करण में गृह प्रवेश ग्रहारम्भ, वास्तुकर्म एवं विशेषकर हल आदि का चलाना शुभ होता है।

(५०)

वणिजं वणिजानान्तु सर्वपण्येष्ट शोभनम्।
विक्रेतारिध्यते तत्र क्रेता तत्र नरिध्यते ।१०।

भावार्थ - 'वणिज' नामक करण व्यापार करने वालों को शुभ कहा गया है, और इस करण में बेचने वालों को तो लाभ होता है परन्तु खरीदने वाले को हानि होती है।

(५१)

विष्टिना करणे कर्म न कुर्यान्नैव कारयेत्।
कृछ्रेणापि कृतं कर्म भवेदल्प फलोदयम्। ११।

भावार्थ - 'विष्टि' नामक करण में स्वयं ही किसी शुभ कार्य को न करे और किसी अन्य से भी न कराये। यदि कठिनता से कोई कार्य आरम्भ भी किया जावेगा तो उसका थोड़ा ही फल प्राप्त होगा।

(५२)

यदिसिध्यति तत्कर्म विष्टिनातु कदाचन।
नतच्चिरमशंकेत शक्यं भोक्तुं सुरैरपि ।१२।

भावार्थ - यदि कदाचित 'विष्टि' नामक करण में किया हुआ कार्य सिद्ध भी हो गया, तो यह निःसन्देह है कि उस कार्य के फल को देवता लोग भी अधिक दिन तक नहीं भोग सकते, क्योंकि वह स्थायी नहीं होता है।

(५३)

आगतं धननाशाय आदौ कार्य विनाशिनी।
मध्ये प्राणहराज्ञेया विष्टि पुच्छेध्रुवं जयः ।१३।

भावार्थ - विष्टि के लगते-लगते ही यदि कार्य प्रारम्भ किया जायेगा तो धन की हानि होगी, यदि आरम्भ हो जाने पर कार्य प्रारम्भ किया जायेगा तो वह कार्य ही नष्ट हो जायेगा। यदि 'विष्टि' के मध्य में कोई कार्य प्रारम्भ किया जायेगा, तो प्राण नाश होगा। अर्थात यजमान की मृत्यु होगी। परन्तु विष्टि के अन्तिम भाग में जो कार्य किया जायेगा उसमें जय एवं सफलता अवश्य ही मिलेगी।

(५४)

आगतंतु घटिका पंच वर्तमाने मतुर्दश।
मध्येचाष्टी विजानीयद् विष्टिपुच्छेत्रय स्मृतः ।१४।

भावार्थ - प्रारम्भ की पांच घड़ी तक 'विष्टि' का आगमन काल होता है, 14 घड़ी तक उसका वर्तमान काल होता है, फिर आठ (८) घड़ी, उसके मध्यकाल की होती है और अन्तिम तीन घड़ी उसकी पूछ कहलाती है।

(५५)

शकुनस्य गुरुत्मान्वै वृषभो वैचतुष्पदे।
नागस्य देवता नाना: कौस्तुभस्य धनाधिप: ।१५।

भावार्थ -'शकुन' नामक करण के स्वामी गरुड़, 'चतुष्पद' के वृषभ, 'नाग' नामक करण के स्वामी नाग (सर्प) होते हैं और कौस्तुभ (किंस्तुघ्न) के स्वामी कुवेर होते हैं।

(५६)

ववस्य देवता विष्णुर्वालवस्य प्रजापति।
कौलवस्य भवेत्सोमस्तैतिलस्य शतक्रतु: ।१६।

भावार्थ - वव करण के देतवा विष्णु, वालव के ब्रह्मा, कौलव के चन्द्रमा और तैतिल के देवता इन्द्र होते हैं।

(५७)

गराजिर्वसुदेवत्यो मणिभद्रोऽथ वाणिजे।
विष्टेस्तु दैवतं मृत्युदेवता परिकीर्तित: ।१७।

भावार्थ - गर करण के वासुदेव, वणिज के मणिभद्र और विष्टि नामक करण के देवता मृत्यु होते हैं।

(५८)

कृत्रिरासदिवादरंभूत दिवाशुचरष्ट दिवैकर पूर्णदिवा।
इतिविष्टिहर्गण रात्रिचरानच कर्म भवेत्।
कृतमाशु शुभम् ।१९।६।५।६०।

भावार्थ - विष्टि की तीन, सात, दश, चौदह, आठ और पन्द्रह इनका विचार करके जो कार्य किया जायेगा वह शीघ्र शुभ फल देगा।

तिथ्यनुसार यात्रा का फल

(५९)

आदौविसर्जयेत् धीरः प्रस्थाने प्रथमां तिथिम्।
द्वितीया संप्रपातस्य सिद्धमर्थं विनिर्दिशेत् ।१।

भावार्थ - धैर्यवान पुरुषों को कभी भी प्रतिपदा में यात्रा नहीं करनी चाहिये। इसकी अपेक्षा द्वितीया में प्रस्थान करने से अवश्य कार्य सिद्धि होता है।

(६०)

तृतीया क्षोममारोग्यं चतुर्थी मरणाद्भयम्।
पंचमी विजया श्रेष्ठा सार्वैसर्वार्थ साधिकी ।२।

भावार्थ - तृतीया में यात्रा करने वाले को आरोग्य और कल्याण प्राप्त होता है। चतुर्थी में यात्रा करने से मृत्यु का भय रहता है पंचमी तिथि सब प्रकार के कार्यों को सिद्ध करने वाली है और इस तिथि में यात्रा करने से अवश्य ही विजय प्राप्त होती है।

(६१)

षष्ठीत्वं , न लाभाय सप्तमीत्वन्न भाग्भवेत्।
अष्टमी रोगलाभाय नवम्यां न निवर्तते ।३।

भावार्थ - षष्ठी को यात्रा करने से हानि होती है। सप्तमी की यात्रा अशुभ हाती है। अष्टमी की यात्रा से रोग उत्पन्न होता है और नवमी में जाने वाला फिर लौटकर नही आता है।

(६२)

दशम्यां प्रस्थितो राजा भूमिलाभाय कल्पते।
एकादशी तु सर्वत्र प्रशस्ता सर्व कर्मसु ।४।

भावार्थ - दशमी में यात्रा करने से राजा आदि सभी को भूमि का लाभ होता है, और एकादशी की यात्रा सर्वदा शुभ होती है।

(६३)

द्वादशीत्वर्थनाशाय सन्धि कुर्यात् त्रयोदशी।
चतुर्दशी चलत्कर्म कौतुकान्यत्र कारयेत् ।५।

भावार्थ - द्वादशी में यात्रा करने से धन की हानि होती है, त्रयोदशी में सन्धि कार्य शुभ होता है और चतुर्दशी की यात्रा में चर कार्यों में सफलता प्राप्त होती है, तथा प्रयोग आदि सिद्ध होते हैं।

(६४)

अमावस्यां न यात्रा स्यात् पौर्णमास्यांतथा दिवा।
पौर्णमास्यां प्रयातस्य नसिद्धिस्तस्य जायते।६।

भावार्थ - अमावस्या को यात्रा सर्वथा निषिद्ध है और पूर्णमासी को दिन में यात्रा नही करनी चाहिये क्योंकि पूर्णमासी को दिन में यात्रा करने से कार्य को सिद्धि नही होती है।

(६५)

षडष्टौ नव चत्वारि पक्षछिद्राणि वर्जयेत्।
अपि नक्षत्रसम्पन्नां वर्जयेत्तु चतुर्दशीम् ।७।

भावार्थ - ज्यौतिष शास्त्र के अनुसार षष्ठी, अष्टमी, नवमी और चतुर्थी ये तिथियां प्रत्येक पक्ष के छिद्र माने गये हैं। अतः इनमें

यात्रादि शुभ कार्य वर्जित हैं और चतुर्दशी तो शुभ नक्षत्र से युक्त होने पर भी सर्वथा निषिद्ध है।

तिथि-संज्ञा एवं उनके फलादेश

(६६)

नन्दाभद्रा जया पूर्णा पक्षास्तु पंचमी।
तिथयः पंच विज्ञेया पक्षायोरुभयोरपि ।८।

भावार्थ - नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये दोनों ही पक्षों की १५-१५ तिथियों की पांच संज्ञायें होती हैं।

(६७)

नन्दा प्रतिपदं विद्यात्षष्ठीमेकादशीमपि।
द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी चोप पद्यते ।।९।।

भावार्थ : प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी की 'नन्दा' संज्ञा है और द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी की भद्रा संज्ञा है।

(६८)

तृतीया चाष्टमी चैव जया चस्यात् त्रयोदशी।
चतुर्थी नवमी रिक्ता तथैव चतुर्दशी ।१०।

भावार्थ - तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी को 'जया' कहते हैं। चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी की 'रिक्ता' संज्ञा है।

(६९)

पञ्चमी दशमी पूर्णा तथा पञ्चदशीति च।
तिथयोह्येषुवारेषु सिद्धार्थास्तत्रतच्छुणु ।११।

भावार्थ - पंचमी, दशमी और पूर्णमासी इन तिथियों को 'पूर्णा' कहते हैं। उपर्युक्त सभी तिथियां किन किन वारों में सिद्धिदायक हो जाती है, यह बात आगे कही जा रही है।

(७०)

नन्दा भृगौ सोम सुतेच भद्रां जया सूर्य सुते च रिक्ताम्।
पूर्णां गुरौ पंचसुपंच एते जया वहाः सर्वफलप्रदाश्च ।१२।

भावांर्थ - नन्दा शुक्रवार को, भद्रा बुधवार को, जया भौमवार को, रिक्ता शनिवार को, पूर्णा गुरुवार को शुभ फल तथा विजय कराने वाली मानी गई है।

(७१)

सर्व युग्मं छिद्र माहुर्स्तिथि ज्ञाः
सामावस्या न द्वितीया दशाम्यौ।
कुज श्रेष्ठं तत्र जाग तृतीया,
सर्वारम्भा वर्जनीया नवम्याम् ।१३।

भावार्थ - युग्म तिथियों को तिथि वेत्ता सभी ज्यौतिषियों ने दोषयुक्त कहा है। अमावस्या, द्वितीया और दशमी भी शुभ नहीं है। यदि तृतीया को भौमवार हो तो वह शुभ होती हे। नवमी में कोई भी कार्य न करें।

(७२)

नन्दायां भक्ष्यभोज्यानि भूषणानि वरस्त्रियः।
आनन्दं चैव कुर्वीत मनः प्रियतमानि च ।१।

भावार्थ - 'नन्दा' तिथियों में स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण धारण करें और श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करके आनन्द मनावें।

(७३)

भद्रायां भद्रकार्याणि यानि योग्यासनानिच।
स्वस्ति वाचन कर्माणि कारयेदारभेतच ।२।

भावार्थ - भद्रा तिथियों में सुन्दर आसन अर्थात् पद ग्रहण करना, सुन्दर भोजन करना स्वस्ति वाचन आदि मांगलिक कार्य करके शुभ कार्यों को प्रारम्भ करें और अन्यों से भी करावें।

(७४)

जयायां योजयेत्सेनां वणिजः क्षिप्रकारिणः।
पण्यविक्रयणं कुर्युः शस्त्रकर्मच कारयेत् ।३।

भावार्थ - जया तिथियों में सेना का संगठन और शस्त्र निर्माण आदि कार्य करने चाहिये तथा वैश्यजनों को क्रय-विक्रय भी इन्हीं तिथियों में लाभ कारक रहता है।

(७५)

रिक्तायां वर्जयेन्नित्यं तिथि विचक्षणः।
ध्रुवाणि सर्वकार्याणि स्थावराणिचराणि च ।४।

भावार्थ - दैवज्ञो का मत है कि रिक्ता तिथियों में चर एवं स्थिर आदि सभी प्रकार के कार्य करना वर्जित है।

(७६)

पूर्णायां सेतु वन्धांश्च कोष्ठान् कोशांश्च कारयेत्।
वाहना निचपोषे च रथ यानानि कारयेत् ।५।

भावार्थ - पूर्णा तिथियों में सेतु (पुल), घर, कोषगृह, खजाने, रथ-गाड़ी आदि वाहनों का निर्माण कराना शुभ है।

(७७)

एवमेवत्रिरम्यस्तं पक्षोण परिवर्जयेत्।
ज्योतिः शास्त्रप्रयुक्तानां कर्मणां फलदं भवेत् ।६।

भावार्थ - पूर्व श्लोकों में कहे गये तीन कार्य जब पक्ष का क्षय हो तब नही करने चाहिये। ऐसा दैवज्ञो का मत है।

(७८)

ऋतु क्षये चन्द्रमसः च पक्षक्षये ज्योतिषि संग्रहेच।
नक्षत्र वर्गेषु विगर्हितेषुयात्रा विधानंनवदन्तितज्ज्ञाः ।७।

भावार्थ- ज्यौतिषियों का कहना है कि ऋतु क्षय में, चंद्रमा के क्षय में, पक्ष के क्षय में और अनेक गृहों के एक ही राशि पर संग्रह काल में तथा निन्द्रित नक्षत्रों में भी यात्रा आदि शुभ कार्य वर्जित है।

(७९)

पक्षक्षयस्तुयः प्रोक्तः कियन्तंकालमादिशेत्।
एकादश्यां व्यतीतायां विज्ञेयः पक्ष संक्षयः ।8।

भावार्थ - पक्ष के क्षय की अवधि का किना समय होना चाहिये इसके उत्तर में कहा गया है कि एकादशी के बीतने पर पक्ष क्षय का दोष प्रारम्भ होता है।

(८०)

शुक्रो धनक्षयं कुर्याद् बुद्धि मोहं वृहस्पतिः।
लोहिताङ्गो महाव्याधिं कुर्याच्चैव न संशयः ।९।

भावार्थ - शुक्रास्त में शुभ कार्य करने से द्रव्य नाश होता है। गुरु के अस्त होने पर बुद्धि में वैकल्प उत्पन्न होता है। मंगल के अस्तकाल में रोगादि होते है, बुध के अस्तकाल में भाईयों को कष्ट होता है, और शनि के अस्त होने पर यदि शुभ कार्य किया जायेगा तो स्वदेश छोड़कर विदेश में रहना पड़ेगा।

(८१)

बंधुपक्षाक्षयं सूर्यो भयं सोमस्तथैवच।
आत्मरक्षातु नक्षत्रं तिथिः स्यादर्थ साधकी ।१०।

भावार्थ - सूर्य के अस्त होने पर (भाई) बन्धु बान्धवों की हानि होती है, क्षीण चन्द्र में कार्य करने से भय उत्पन्न होता है। नक्षत्र से आत्मरक्षा होती है तथा तिथि से धन प्राप्ति होती है।

(८२)

करणो कार्यनिष्पति मुहूर्त लाभमादिशेत्।
चतुर्भि: कारयेत् कर्म सिद्धि हेतो विचक्षण: ।११।

भावार्थ - शुभ करण में कार्य आरम्भ करने से सिद्धि होती है, और शुभ मुहूर्त में अवश्य लाभ होता है। अत: बुद्धिमान पुरुषों को चाहिये कि करण, मुहूर्त, नक्षत्र एवं तिथि इन चारों को देखकर कार्य आरम्भ करें जिससे कार्य की सिद्धि अवश्य हो सके।

(८३)

तिथि नक्षत्रकरणं मुहूर्तं नेति नित्यश:।
नक्षत्रस्यहिदूरत्वात्त्रिभि: कर्म समारभेत् ।१२।

भावार्थ - तिथि, नक्षत्र, करण और मुहूर्त इन चारों को देखकर ही सर्वदा कार्य करना चाहिये, यदि इनमें शुभ नक्षत्र न हो तो केवल तिथि, करण और मुहूर्त इन तीनों को ही शुभ देखकर कार्य आरम्भ करें।

(८४)

नक्षात्रेणा करणोन मुहूर्तंनेति नित्यश:।
नक्षत्रस्य चदूरत्वाद् द्वाभ्यां कर्म समारभेत् ।१३।

भावार्थ - नक्षत्र, करण और मुहूर्त इन तीनों को देखकर सदैव कार्य करे और यदि नक्षत्र दूर हो तो करण एवं मुहूर्त इन दो को देखकर कार्य आरम्भ कर दें।

(८५)

करणोन मुहूर्तेन त्वरमाणस्तु बुद्धिमान्।
करणस्यादि दूरत्वा न्मुहुर्तेनैव कारयेत् ।१४।

भावार्थ - यदि कार्य करने की शीघ्रता हो और शुभकरण दूर पडता हो तो बुद्धिमान को चाहिए कि केवल शुभ मुहूर्त देखकर कार्यारम्भ करें।

नोट - यहां पर मुहूर्त से अभिप्राय इस ग्रन्थ के आरम्भ में बताये हुए 15 मुहूर्तों से है।

(८६)

मुहूर्तेन कृतं कर्म सिद्धयते नात्र संशयः।
दूरस्थस्य मुहूर्तस्य क्रिया च त्वरिता यदि ।15।

भावार्थ- शुभ मुहूर्त में आरंभ किया गया कार्य अवश्य ही सिद्ध होता है इसमें कोई संदेह नहीं है और यदि शुभ मुहूर्त दूर हो तथा कार्य करने की जल्दी हो तब निम्नलिखित कार्य करे।

(८७)

द्विजपुण्याहघोषेण कृत स्यात्सर्व साम्पदम्।
नक्षत्रस्य मुहूर्तस्य तिथेश्च करणस्यच ।१६।

भावार्थ - ब्राह्मणों के द्वारा पुण्याहवाचन कराके जो कार्य किया जाता है उसमें तिथि नक्षत्र और करणादि के सभी शुभ गुण स्वयं प्राप्त हो जाते हैं और वह सर्व संपत्ति कारक है।

(८८)

चतुर्विधस्य ज्ञानस्य शकुनो दण्ड नायकः।
शकुनः पबनश्चैव मनः परजनस्तु वा ।१७।
यस्यै तान्यनुकूलानि सिद्धिरेव न संशयः।

नतत्रबलवती तारा यत्रेन्दुर्बलवत्तरः ।१८।

भावार्थ - ऊपर कहे हुए नक्षत्रादि चार प्रकार के मुहूर्तों की सफलता शकुन पर निर्भर रहती है। इसलिये शुभ शकुन, शुभ पवन अर्थात स्वर, मनकी प्रसन्नता एवं कुटुम्बियों का पूर्ण सहयोग ये बातें यात्रा या किसी कार्य के आरम्भ में अनुकूल होंगी तब कार्य सिद्धि अवश्य होगी। जब चन्द्रमा बलवान हो तब तारा के बलवान होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(८९)

नहिभर्तृस्तिथता नारी क्वचित् स्वातन्त्र्यमर्हति ।
न कृष्णपक्षो शशिनः प्रभाव स्तारा वलंतत्र विचार्यदेयम् ।१९।

भावार्थ - जिस प्रकार पति की उपस्थिति में स्त्री को स्वतंत्रता का कोई अधिकार नहीं है उसी प्रकार कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा का कोई अधिकार नहीं है। अतः कृष्ण पक्ष में तारा बल देखना उचित है।

(९०)

विदेशे जाते विकलौ चपत्यौसर्वाणि कार्याणि करोति पत्नी।
तिथिरेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्रंच चतुर्गुणम् ।२०।

भावार्थ - पति के विदेश चले जाने या उसके बीमार हो जाने पर घर के सभी कार्य स्त्री करती है। अर्थात् चन्द्रमा के अभाव में तारा की ही प्रधानता माननी चाहिये कहा भी है -

"शुक्ले चन्द्रबलं ग्राह्यं कृष्णे ताराबलं तथा"

भावार्थ - अर्थात् शुक्लपक्ष में चन्द्रमा का बलवान होना आवश्यक है और कृष्ण पक्ष में तारा बलवान होना चाहिये।

तिथि का एक गुण होता है और नक्षत्र के चार गुण माने गये है91

(९१)

वारश्चाष्ट गुणः प्रोक्त करणं षोड्शान्वितम्।
द्वात्रिंशत् गुणयोगश्च ताराषष्टि समनिवता ।२१।

भावार्थ - बार का आठ गुना फल होता है, करण का सोलह गुना होता है, योग का बत्तीस गुना होता है और तारा का फल साठ गुना अधिक होता है।

(९२)

चन्द्रः शतगुणः प्रोक्कतस्माच्चन्द्र बलाबलम्।
समीक्ष्य चन्द्रस्य बलाबलनिग्रहाःप्रयच्छन्ति शुभाशुभानि।
मनः समेतानियथेन्द्रियाणि कर्माणियथा यान्तिकेवलानि ।२२।

भावार्थ - मुहूर्त में चन्द्रमा का फल सौगुना होता है इसलिये चन्द्रमा का बलाबल अवश्य देखना चाहिये क्योंकि अन्य ग्रह भी चन्द्रमा के बलाबल के अनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। जिस प्रकार दशों इन्द्रिय मन से युक्त होकर ही कार्य में प्रवृत्त होती है, केवल इन्द्रियां कभी भी कार्य-प्रवृत्त नहीं हो सकती है, इसी प्रकार ग्रहों में चन्द्रमा को मन कहा गया है। अतः चन्द्रमा के बिना दूसरे ग्रह कुछ भी फल नहीं करते।

वारों के अनुसार कार्यों का निरूपण

(९३)

आदित्यः सोमोभौमश्च तथा बुधवृहस्पतिः।
भार्गवः शनैश्चरश्चैव एते सप्तदिनाधिपाः ।१।

भावार्थ - सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

ये सातों ग्रह अलग अलग दिनों के स्वामी हैं।

(१४)

नृपाभिषेकं नृपतिप्रयाणं नृपस्य कार्य नृपदर्शनंच।
यच्चाग्निं कार्यभुवि किञ्चिदुक्तं तत्सर्वमादित्य दिने प्रशस्तम्। २।

भावार्थ - राजा का अभिषेक, राजा की यात्रा, राज्य के कार्य, राजा का दर्शन और हंवनादि अग्नि कार्य भी रविवार को शुभ माने गये हैं।

(१५)

पानं रसानां मधुसोमपान सौभाग्यकर्माण्यनुलेपनानि।
क्षेत्रेऽथबीजानिवपेत बृक्षाः सोमस्यकुर्याद्दिवसेविधिज्ञः। ३।

भावार्थ - रसों का पीना, सोमपान या मधुपान करना, श्रृङ्गार की वस्तु धारण करना, उवटन आदि लगाना, खेतों में बीज बोना और वृक्ष लगाना आदि कार्य सोमवार को करना श्रेष्ठ है।

(१६)

भेदाभिघातो नगरे पुरेवा सेनापतित्वं चतथैव राज्ये।
व्यायामशस्त्राभ्यसनंच चौर्यभूमेः सुतस्याहि सदाप्रशस्तम्। ४।

भावार्थ - नगर अथवा पुर में जब भेद नीति से कार्य करना हो, राज्य में सेनापति का पद ग्रहण करना हो, तब मंगलवार को करें और इसी प्रकार व्यायाम, शस्त्राभ्यास और चोरी आदि कार्य भी मंगलवार को करना चाहिये।

(१७)

द्यूत प्रवेशोरणकारणार्थ कन्याप्रियार्थ रिपुसन्धिकार्यम्।
भिन्नेऽथमैत्रं प्रतिसंधि कार्यक्षिप्रं प्रशसन्तिदिनेबुधस्य ।५।

भावार्थ - जुआ खेलना, युद्ध करना, कन्या के विवाहादि का निश्चय करना, शत्रु एवं रूठे हुये मित्रों से सन्धि कार्य करना आदि कार्य बुधवार को शुभ होता है।

(९८)

स्वाध्यायदेवार्चनवेशमकार्य संस्कारदीक्षाचतथायतीनाम्।
वस्त्राणिदाराप्रिय भूषणानि कृषि कुर्याद्देवगुरोर्दिनेच ।६।

भांवार्थ - अध्ययन आरम्भ करना, देवता का पूजन आरम्भ करना, गृह निर्माण कराना, महात्मा एवं गुरुओं से दीक्षा ग्रहण करना, वस्त्र एवं आभूषण खरीदना और खेती का कार्य प्रारम्भ करना गुरुवार को शुभ होते हैं।

(९९)

अश्व प्रवाहं प्रथमं प्रशस्तं योग प्ररोहो गज रोहणंच।
कन्याप्रदानं क्रयविक्रयौच तेषां सदा शुक्रदिने प्रशस्तम् ।७।

भावार्थ - पहले पहल घोड़े पर चढ़ना, कन्यादान करना हाथी पर चढ़ना एवं खरीदना बेचना आदि कार्य शुक्रवार को शुभ होते हैं।

(१००)

स्थाप्यंच कर्म ऋतुभिश्च यूपोगृह प्रवेशो गजबन्धनंच।
ग्रामेऽथवासो नगरे पुरे वा शनैश्चरे सर्वमिदं प्रशस्तम् ।८।

भावार्थ - स्थापना करना, खम्बे आदि गड़वाना, गृह प्रवेश करना, हाथी लेना, ग्राम, नगर या पुर में बसना, ये सब कार्य शनिश्चर को शुभ होते हैं।

(१०१)

आत्म कर्म गुणं श्रेष्ठं पुरुषं पुरुषं प्रति।

अल्प ग्रन्थं महार्थच प्रबक्ष्यामि भृगोर्मतम् ।१।

भावार्थ - प्रत्येक मनुष्य के शुभ कर्म एवं गुणों का वर्णन इस छोटे से ग्रन्थ में, जो कि महाअर्थ वाला है किया जा रहा है। यह भृगुजी का मत है।

नक्षत्रों की संज्ञा तथा वर्गीकरण

(१०२)

पृथक् पुरुषविज्ञेयं नक्षत्राणां शुभाशुभम्।
आत्म सम्पत् करंज्ञेयमात्मानमृद्धिमिच्छताम् ।२।

भावार्थ - प्रत्येक नक्षत्र का शुभ और अशुभ फल जानकर कार्य आरम्भ करने से लाभ होता है। अतः जो अपनी उन्नति चाहें उन्हें उचित है कि अपने को समृद्ध बनाने वाले नक्षत्रों का ज्ञान अवश्य कर लें।

(१०३)

नवानां त्रिक्वर्णानामाधाने जन्म कर्मणि।
अधमोत्तमवर्गेषु संवदन्तीह भागशः ।३।

भावार्थ - २७ नक्षत्रों का वर्गीकरण उत्तम, मध्यम एवं अधर्मादि वर्गों के अनुसार किया जा रहा है। ये ही नक्षत्र गर्भादानादि संस्कारों के समय देखने चाहिये।

(१०४)

जन्मसंपद्विपत्क्षेम्यः प्रत्वरः साधकस्तथा।
नैधनो मित्र वर्गश्च परमो मैत्रएवतु ।४।

भावार्थ - नक्षत्रों की संज्ञा का विभाजन इस प्रकार है - जन्म, संपत्कर, विपत्कर, क्षेम्य, प्रत्वर साधक, नैधन, मित्र और परम मैत्र।

(१०५)

दशामं जन्म नक्षात्रात् कर्म नक्षात्रमुच्यते।
एकोनविंशातिचैव गर्भाधानकमुच्यते ।५।

भावार्थ - जन्म नक्षत्र से जो दशवां नक्षत्र होता है वह कर्म नक्षत्र कहलाता है, और जन्म नक्षत्र से उन्नीसवां नक्षत्र गर्भाधान संज्ञा वाला होता है।

(१०६)

द्वितीय मेकादशामं विंशाति: सम्पत्करोगण:।
तृतीयमेकविंशातु द्वादशांतु विपत्करम् ।६।

भावार्थ - दूसरा, ग्यारहवां और बीसवां नक्षत्र धन लाभ कराने वाली 'सम्पत्कर' संज्ञा से युक्त होता है और तीसरा बारहवां तथा इक्कीसवां विपत्ति लाने वाले है अर्थात् विपत्कर संज्ञा वाले है।

(१०७)

क्षेम्यं चतुर्थ द्वाविंशांभवेद्यच्च त्रयोदशाम्।
प्रत्वरं पञ्चमं विद्यात्त्रयोविंशांचतुर्दशाम् ।७।

भावार्थ - जन्म नक्षत्र से चौथा, बाईसवां और तेरहवां जो नक्षत्र होता है, उसकी क्षेम्य संज्ञा है और पांचवें चौदहवें तथा तेईसवें नक्षत्र की प्रत्वर नाम की संज्ञा होती है।

(१०८)

साधकं तुचतुर्विशां षष्ठं पञ्चदशां च यत्।
नैधनं पञ्चर्विशांतु षोडशां सप्तमं तथा ।८।

भावार्थ - जन्म नक्षत्र से चौबीसवें, छठवें और पन्द्रहवें नक्षत्र की साधक संज्ञा है और सातवें, सोलहवें तथा पच्चीसवें नक्षत्र

की नैधन संज्ञा है।

(१०९)

मैत्रे सप्तदशं विद्यात् षड्विंशतिश्चाष्टमम् ।
सप्तविंशापरं मैत्रं नवमष्टादशंचयत् ।९।

भावार्थ - आठवें, सत्रहवें और छब्बीसवें नक्षत्र की मैत्र नामक संज्ञा होती है तथा नवमें, अठारहवें एवं सत्ताईसवें की परम मैत्र संज्ञा होती है।

(११०)

नव नक्षत्रके वर्गे प्रथम तृतीयं तु वर्जयेत्।
पञ्चमं सप्तमं चैव शेषैः कार्याणि कारयेत् ।१०।

भावार्थ - ऊपर कहे गये नक्षत्रों के नौ वर्गों में से, प्रथम, तृतीय, पंचम एवं सप्तम वर्ग के नक्षत्रों को छोड़कर शेष वर्गों के नक्षत्रों में शुभ कार्य प्रारम्भ करना चाहिये।

नक्षत्रानुसार गण-निरूपण

(१११)

आधाने जन्म कर्माणि ज्ञेयास्तेतानु पूर्वशः।
त्रिनक्षत्राः नवगणास्तेषां कर्मफलं श्रृणु ।११।

भावार्थ - आधान एवं जन्मादि संस्कारों के विषय में ऊपर ९ गण कहे गये हैं (अर्थात् तीन-तीन नक्षत्रों का एक गण होता है इस प्रकार २७ नक्षत्रों के सब नौ गण बनते हैं) इन गणों का शुभाशुभ फल एवं उनमें करने योग्य कार्यों का वर्णन सुनो।

(११२)

आधाने जन्म नक्षात्रे नैधाने प्रत्वरेषुच।
प्रवासे प्राण संदेहः क्षुरः कर्मच वर्जयेत् ।१।

भावार्थ - आधान संज्ञक नक्षत्र, जन्म नक्षत्र, नैधन संज्ञक एवं प्रत्वर संज्ञक नक्षत्रों में प्रवास करने से मृत्यु का भय रहता है तथा इसमें बाल काटना भी वर्जित है।

(११३)

पराजयं प्रवासंच विवादं गृहकर्मच।
वर्जयेन्मङ्गलं कार्य शान्तिस्वस्त्ययनानिच ।२।

भावार्थ - इससे पूर्व के श्लोकों में कहे गये नैधन एवं प्रत्वरादि संज्ञा वाले नक्षत्र पराजय, विदेश गमन, घर में लड़ाई झगड़ा कराने वाले हैं। अतः इन नक्षत्रों में शान्तिपाठ एवं स्वस्त्ययन आदि सभी शुभ कर्म कराना वर्जित है।

(११४)

क्षौरं विवाहं भैषज्यं यात्रा सेनां नयोजयेत्।
सर्वमंगलकार्येषु त्रिषु कर्म विवर्जयेत् ।३।

भावार्थ - पूर्वोक्त तीन गणों में बाल काटना, विवाह करना औषधि सेवन करना, यात्रा पर जाना एवं सेना लेकर आक्रमण करना आदि सभी शुभ कार्य वर्जित है।

(११५)

विद्यारम्भं तपोदानं मार्जनं भोषजक्रिया।
भरणं च सुभृत्यानां कुर्यात्सम्पत्करे गणे ।४।

भावार्थ - विद्या का आरम्भ करना, तपस्या का प्रारम्भ करना, दान देना, मार्जन करना, औषधि सेवन करना और नौकरों का पालन पोषन करना, आदि कार्य 'सम्पत्कर' संज्ञा वाले नक्षत्रों में ही करने चाहिये।

(११६)

अनृतधार्मसंयुक्त शात्रूणां चाभिचारिकम्।
विपत्करेगणे कुर्यात् प्रहरे का दहीति च ।५।

भावार्थ - मिथ्या भाषण एवं अधर्माचरण से शत्रुओं के प्रति जो क्रूराभिचार प्रयोग किये जाते हैं वे विपत्कर नामक गण के नक्षत्रों में एवं प्रथम प्रहर में ही फलदायक समझने चाहिये।

(११७)

क्षेम्येऽध्वानं प्रपद्येत गोप्यार्थाश्चात्र गोपयेत्।
वाहनानिचपोषेतु वहुशोऽर्थांश्चयोजयेत् ।६।

भावार्थ - क्षेम्य संज्ञा वाले नक्षत्रों में यात्रा करना, गुप्त द्रव्य को गुप्त स्थान में रखना, हाथी घोड़ा आदि वाहन खरीदना और अनेक प्रकार के अर्थ प्राप्ति की योजनायें बनाना शुभ है।

(११८)

प्रत्वरे तु न कर्त्तव्याः सर्वारम्भाः कदाचन।
दुर्गंच न प्रवेष्टव्यं न च किञ्चित् समाचरेत ।७।

भावार्थ - प्रत्वर संज्ञा वाले नक्षत्रों में कभी भी शुभ कार्यों का आरम्भ नही करना चाहिये और दुर्ग (किले) आदि मकान में भी प्रथम प्रवेश वर्जित है।

(११९)

असाध्यान्यपि कार्याणि साधयेत्साधके गणे।
सर्वार्थास्तस्यं सिध्यन्ति न चानर्थान्समश्नुते ।८।

भावार्थ - साधक संज्ञा वाले नक्षत्रों में असाध्य से असाध्य भी कार्यों की सिद्धि अवश्य हो जाती है और हानि कभी भी नहीं होती।

(१२०)

नैधाने तु न गन्तव्यं येषु जाताश्च शात्रवः।
तेभ्यो रक्षेत चात्मानमत्यन्त चनविश्वसेत् ।९।

भावार्थ - 'नैधन' संज्ञा वाले नक्षत्रों में यात्रा करने से शत्रुता उत्पन्न होती है। अतः उनसे अपनी रक्षा करते रहे हैं तथा शत्रुओं का कभी विश्वास भी नहीं करना चाहिये।

(१२१)

मैत्रे विवाहानुद् वाहांश्चूडोपनयनानि च।
कुर्यात्परममैत्रे तु यतस्तम्भा मनात्मकम् ।१०।

भावार्थ - 'मैत्र' संज्ञक नक्षत्रों में विवाह, चूड़ाकर्म और उपनयनादि संस्कार करना चाहिये और परम मैत्रे संज्ञा वाले नक्षत्रों में तो उन कार्यों को भी कर डालना चाहिये जो अशक्य प्रतीत होते हैं।

(१२२)

परं परम मैत्रे तु नरो यद्यदभिलषेत्।
प्राप्नुयादर्थसिद्धयन्ति क्षिप्रमेव न संशयः ।११।१२५।

भावार्थ - परन्तु परम मैत्र संज्ञा वाले नक्षत्रों में मनुष्य जो अभिलाषा करता है उसकी पूर्ति अतिशीघ्र हो जाती है इसमें कोई सन्देह नही है।

(१२३)

ग्रहोल्काशनिघार्तैः कम्पैर्दाहैश्च पीडयेत्।
यद्यद् भयं भवर्तितत्तत् प्रवक्ष्याम्यशेषतः।

भावार्थ - ग्रह पीड़ा, किसी का हनन करना, किसी को कम्पन एवं दाहादि की पीड़ा देना इत्यादि अनेक भयों को विस्तार पूर्वक

कहता हूं - सुनिये।

(१२४)

आधाने विद्रवन्त्ययर्था व्याधयो जन्मनि ध्रुवम्।
न च सिध्यन्ति कार्याणि कदाचिद् दशमे हते ।२।

भावार्थ - आघान नक्षत्रों में कार्य नष्ट हो जाते हैं और जन्म संज्ञक गणों में व्याधियां उत्पन्न होती हैं। अत: दशम संख्या वाले गणों में कभी भी कार्य सिद्ध नहीं होते हैं अपितु नष्ट ही हो जाते हैं।

(१२५)

सम्पत्करे हते हानि बुद्धिश्चैव विपत्करे।
क्षेम्ये हतेन प्रवसेत् साधकेऽर्थान्नि साधयेत् ।३।

भावार्थ - सम्पत् कर गण के बिगड़ने पर परदेश में जाना पड़ता है और साधक गण के बिगड़ने से कार्य की सिद्धि कभी नहीं होती है।

(१२६)

प्रत्वरे तु हते विघ्नान् महारोग प्रणाशनम्।
नैधनेन हते विघ्नान महान रिवधो भवेत् ।४।

भावार्थ - प्रत्वर गण के नष्ट होने पर अनेकों विघ्न बाधायें तथा महामारी आदि रोग नष्ट हो जाते हैं और नैधन गण के नष्ट होने पर अनेकों विघ्नों के साथ-साथ बड़े-बड़े शत्रुओं का भी विनाश हो जाता है।

(१२७)

मित्र वर्गाश्च मैत्रे तु न भवन्ति यथा पुरा।
हते परम मैत्रे तु मनोनित्यं न तुष्यति ।५।

भावार्थ - मैत्र संज्ञा वाले गण के बिगड़ने पर मित्रों में परस्पर विरोध उत्पन्न हो जाता है और परम मैत्र गण के बिगड़ने पर मानसिक शान्ति नष्ट हो जाती है।

(१२८)

यद्यत्पीडयते नक्षत्रं यस्मिन्यस्मिन्यदा गणो।
तत्तस्कर्म न कुर्वीत पुरस्ताद् यत्प्रणोदितम् ।६।

भावार्थ - जब जब जिस-जिस गणों में जो-जो नक्षत्र बिगड़ जाय जैसा कि पूर्वोक्त पद्यों में बतलाया है तब उन कार्यों को नहीं करना चाहिये।

(१२९)

वर्गान्तं यत्तृ नक्षत्रं वर्गाद्यं यत्पुनर्भवेत्।
आनुपूर्व्येण वर्गाणामेवं ते नवकास्त्रयः ।७।१३२।

भावार्थ - अब २७ नक्षत्रों के नौ वर्गों को बतलाया जाता है कि जो नक्षत्र एक वर्ग के अन्त में होगा वह दूसरे वर्ग का आदि माना जायेगा। अर्थात २७ नक्षत्र हैं और तीन-तीन नक्षत्रों के क्रम से 9 वर्ग बनेंगे।

रजस्वला नियम विधान

(१३०)

ब्राह्मणी त्रयोदशाहं स्नाता पुष्मधारयत्।
क्षत्रिणी द्वादशाहंतु वैश्येत्येकादशास्तथा ।१।

भावार्थ - ब्राह्मणी रजस्वला होने के पश्चात तेरहवें दिन, क्षत्रिय की स्त्री १२वें दिन और वैश्य की स्त्री ११वें दिन स्नान करें।

(१३१)

शूद्रीणमपि सर्वासां दश रात्रौ विधीयते।

वर्णक्रमेण नारीणा मेष पुष्प विधिः स्मृतः ।२।

भावार्थ - शूद्रों की स्त्रियों को रजस्वला होने के १० दिन बाद स्नान करना चाहिये इस प्रकार चारों वर्णों की स्त्रियों के मासिक धर्म के बाद के स्नान की विधि बतलाई है।

(१३२)

भूमौस्तीर्णेषु दर्भेषु नियता ब्रह्मचारिणी।
स्वपेत् पुष्प मासाद्यत्र्यहं भुक्तेऽनलं कृता ।३।

भावार्थ - रजोधर्म के समय स्त्रियों को चाहिये कि पृथ्वी में कुछ बिछाकर ब्रह्मचर्य पूर्वक शयन करें और तीन दिन तक वस्त्र तथा आभूषणों को न पहनकर ही साधारण रूप से भोजन करें।

(१३३)

हस्तयोर्भूतले वापि पर्णवाप्यशानं मतम्।
नारी पुष्पवती पुष्पंगन्धांश्चैव न धारयेत् ।४।

भावार्थ - रजोधर्म के दिनों में स्त्रियों को हाथों में लेकर अथवा पत्तल में पृथ्वी पर रखकर भोजन करना चाहिये। पुष्प माला और चन्दनादि सुगन्धित पदार्थों को धारण नही करना चाहिये।

(१३४)

ऋतु कालेतु नारीणां नान्यत् पुरुष दर्शनम्।
संभाषंनच कुर्वीत यदीच्छेत् संतर्ति शुभाम् ।५।

भावार्थ - मासिक धर्म के दिनों में स्त्रियों को चाहिये कि वे किसी पुरुष से न तो वार्तालाप ही करें और न उनका दर्शन ही करें। अन्यथा सुयोग्य सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती।

(१३५)

भ्रातरं पितरं पुत्रं मातुलं श्वसुरं गुरुम्।

न संभाषितुमिच्छेत नचस्यादुपवेशनम् ।(६।

भावार्थ - रजोधर्म के दिनों में स्त्रियों को अपने भाई, पिता, पुत्र, मामा, श्वसुर और गुरुजनों से न तो वार्तालाप ही करना चाहिये और न उनके पास जाकर ही बैठना चाहिये।

(१३६)

यादृशोनहिभावेन संभाषन्ती समाचरेत्।
तादृशो जायते गर्भस्तस्माद रक्षेत् रजस्वलाम् ।७।

भावार्थ - रजस्वला स्त्री जिस-जिस भाव में जैसा-जैसा आचरण करेगी वैसी ही वैसी उसकी सन्तान होगी। अत: रजस्वला की रक्षा करना आवश्यक है।

(१३७)

रज्ञसा विप्लुता नारी द्विजस्य ह्युपसेविनः।
प्रज्ञा तेजोबलं चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते ।(८।

भावार्थ - राजस्वला स्त्री के द्वारा जिस ब्राह्मण की सेवा की जावेगी उसकी बुद्धि तेज, बल, नेत्र एवं आयु भी नष्ट हो जायेगी।

(१३८)

तां विवर्जयतस्तस्य रजसा सम्विप्लुताम्।
प्रज्ञातेजोबलं चक्षुरायुश्चैव प्रवर्धते ।९।

भावार्थ - जो ब्राह्मण रजस्वला स्त्री का त्याग करेगा उसकी बुद्धि, तेज, बल, नेत्र एवं आयु की भी वृद्धि होगी।

गर्भाधान सम्बन्धी तिथियां

(१३९)

निष्ठीवितागौरिव मन्दचारी तंद्री प्रहृष्टा हृदयव्यथाच।

तृप्तिस्तु वीजग्रहणेचयोन्यांगर्भस्य सद्योनिगद स्यलिंगम् ।१०।

भावार्थ - निष्ठीविता अर्थात रौंथ करती हुई गौ की तरह धीरे-धीरे चलने वाली, आलस्य युक्त, प्रसन्न मन वाली, हृदय में जिसे गर्भाधान की इच्छा हो; ऐसी बीज ग्रहण में समर्थ स्त्री की योनि में लिंग द्वारा गर्भाधान संस्कार करें।

(१४०)

षष्ठे संभवते गर्भस्तद् वैषष्ठः प्रशास्यते।
अर्ध्दे चक्षुनिष्पत्ति स्त्रिभिर्मासैस्तु जायते ।११।

भावार्थ - छटवें दिन गर्भ स्थित हो जाता है अत: वह श्रेष्ठ होता है और ३$^1/_2$ मास में गर्भस्थ बालक के नेत्रादि अंग बनने लगते हैं।

(१४१)

ऋतु स्वाभाविक स्त्रीणां रात्रयः षोडशः स्मृताः।
चतुर्भिरितरैः सार्धमहोभिः सिद्धिगर्हितैः ।१।

भावार्थ - स्त्रियों के ऋतु के स्वाभाविक दिन 16 माने जाते हैं। जिनमें प्रारम्भ के ४ दिन निषिद्ध हैं शेष दिनों में गर्भाधान करना चाहिये।

(१४२)

तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दित्तैकादशीतुया।
त्रयोदशीच शेषास्युः प्रशस्ताः दशरात्रयः ।२।

भावार्थ - प्रथम चार रात्रियां, ग्यारहवीं रात्रि और तेरहवीं रात्रि ये छः दिन तो निन्दित हैं, शेष दस दिन शुभ माने जाते हैं।

(१४३)

युग्मास पुत्राः जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु।

तस्माद् युग्मासुपुत्रार्थी संविशे दार्तवेस्त्रियाम् ।३।

भावार्थ - युग्म जैसे 2-4-6-8 इत्यादि संख्या वाली रात्रियों में गर्भाधान करने से पुत्र जन्म होता है। और अयुग्म जैसे 1-3-5 इत्यादि संख्या वाली रात्रि में संभोग करने से कन्या का जन्म होता है, इसलिये पुत्र की इच्छा वालों को चाहिये कि रजोधर्म के पश्चात युग्म दिनों में ही गर्भाधान करें।

(१४४)

पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियः।
समेपुमान् पुंस्त्रियोवा क्षीणे चाल्पे विपर्ययः ।४।

भावार्थ - यदि पुरुष का वीर्य बलवान होगा तो पुत्र सन्तान होगी और यदि स्त्री का रज प्रबल हुआ तो कन्या का जन्म होगा। यदि दोनों के रज वीर्य समान बली हुये तो कभी बालक कभी कन्या होती है। यदि क्षीण वीर्य या अल्प वीर्य होगा तब कन्यायें अधिक होंगी।

(१४५)

चतुर्थ्यां जायते पुत्रोऽल्पायुर्गुण वर्जितः
विद्याचार परिभ्रष्टो दरिद्रः क्लेशभाजनः ।५।

भावार्थ - चौथी रात्रि में गर्भाधान से जो पुत्र होता है, वह अल्पायु वाला, गुणों से रहित, नियम एवं आचार विचारों को न मानने वाला, दरिद्री और दुःखी रहने वाला होता है।

(१४६)

पञ्चम्यां पुत्रिणी नारी षष्ठयां पुत्रस्तु पुत्रवान्।
सप्तम्यां प्रजां कन्यामष्टमयामीश्वरः सुतः ।६।

भावार्थ - पांचवी रात्रि में गर्भाधान से कन्या उत्पन्न होती है

छठवीं रात्रि में करने से पुत्र उत्पन्न होता है, सातवीं में कन्या व आठवीं रात्रि में गर्भाधान करने से भाग्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है।

(१४७)

नवम्यां सुभगा नारी दशम्यां प्रवरः सुतः।
एकादश्यामधर्मा स्त्री द्वादश्यां पुरुषोत्तमः ।७।

भावार्थ - नवमी रात्रि में संस्कार से सौभाग्यवती कन्या उत्पन्न होती है। दशवीं रात्रि में श्रेष्ठ (पुरुष) पुत्र का जन्म होता है। ग्याहवीं रात्रि में अधर्माचरण करने वाली कन्या होती है। और बारहवीं रात्रि में पुरुषों में श्रेष्ठ पुत्र होता है।

(१४८)

त्रयोदश्यां सर्व शठापापा वर्णसंकरकारिणी।
जायते सर्व दुष्टा स्त्री दुःखशोकभय प्रदा ।८।

भावार्थ - तेरहवीं रात्रि में गर्भाधान करने से मूर्ख, पापाचरण करने वाली, वर्णशंकर सन्तान उत्पन्न करने वाली, तथा दुःख एवं शोकप्रदा दुष्टा कन्या का जन्म होता है।

(१४९)

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च शासितात्मा तपो निधिः।
जायते च चतुर्दश्यां पितेव जगतः पति। ।१०।

भावार्थ - चौदहवीं रात्रि के गर्भ से धर्मात्मा, कृतज्ञ, अपने ऊपर नियंत्रण रखने वाला, तपस्या करने वाला एवं संसार पर अधिकार रखने वाला, पिता के समान पुत्र उत्पन्न होता है।

(१५०)

राजपत्नी महाभागा राजवशं गताः स्त्रयः।
जायते पञ्चदश्यांतु बहुभोगा पतिव्रताः ।१०।

भावार्थ - पन्द्रहवें दिन गर्भाधान करने से राजवंशों के समान सुन्दर, अधिक भाग्यशाली, अधिक सुखों को भोगने वाली तथा पतिव्रता कन्या उत्पन्न होती है।

(१५१)

विद्यालक्षणसम्पन्नः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आधारः सर्व भूतानां षोडस्यांयः प्रजायते ।११।

भावार्थ - सोलहवीं रात्रि के गर्भ से, विद्वान, सत्य बोलने वाला, जितेन्द्रिय एवं सबका पालन करने वाला पुत्र उत्पन्न होता है।

(१५२)

कन्यातु विकले ज्ञेया युग्मे भवति मानवः।
तृतीया संततिर्यस्य तदरक्षेत् कुलदूषकम् ।१।

भावार्थ - ऊनी संख्या की रात्रियां जैसे १,३,५ इत्यादि में गर्भ रहने से कन्या का जन्म होता है और पूर्ण संख्या जैसे २,४,६ इत्यादि के गर्भ से पुत्र का जन्म होता है तथा इसके विपरीत तीसरी सन्तान क्लीव या नपुंसक से बचना चाहिये क्योंकि वह कुल में कलंक लगाने वाली होती हैं।

(१५३)

सप्तमे प्रियते जन्तुस्तन्मुहूर्तमपि वर्जयेत्।
स्नातायां दशमी तस्यां श्राद्धं तत्र विवर्जयेत् ।२।

भावार्थ - सातवीं रात्रि में गर्भाधान करने से बालक की मृत्यु हो जाती है, इसलिये इसको त्याग देवे। दशवी रात्रि के गर्भ से अयोग्य सन्तान होती है जो श्रद्धादिक कर्म नहीं करती।

(१५४)

अंगादंग संभूतंस्वमंगमधितिष्ठति।
पिता पुत्रत्वमापन्नो जायतेम्रियतेपिवा ।३।

भावार्थ - अंग प्रत्यंग के सम्पर्क से सन्तान की उत्पत्ति होती है, पिता ही सन्तान के रूप में जन्म लेता है, और वही मृत्यु को भी प्राप्त होता है। पिता का ही रूप पुत्रादि सन्तान मानी गई है। यथा - "आत्मावै जायते सुनूः"

(१५५)

एवमेव त्रिभिर्भावैः सन्ततिश्च पुनः।
अच्छिन्नो दैवतस्तंतु प्रजास्तस्भात् प्रजायते ।४।

भावार्थ - उपरोक्त पुत्र कन्या और क्लीव ये तीन रूपों में बार-बार सन्तान का जन्म होता है। दैव के सम्बन्ध से वंश की वृद्धि के लिए ही पुत्र का जन्म होता है।

(१५६)

पतिसंयोगकालेतु कन्या विघ्नं करोतिचः।
अंपुस्त्वं लभते जन्म यत्र यत्रोपजायते ।५।

भावार्थ - पति के संयोग के समय जो स्त्री विघ्न करती है उसको अन्य जन्मों में कभी भी पति एवं पुत्र का सुख नहीं होता है।

(१५७)

धर्मार्थ काम युक्तानि क्रूराणि मृदू निच।
सिद्ध्यर्थ योनियोगेषु कुर्यात्कर्माणि नित्यशः ।६।

भावार्थ - धर्म, अर्थ और काम की सिद्धियों के निमित्त कठोर एवं सरल सभी प्रकार के कर्मों को सदैव करते रहना चाहिये।

(१५८)

एवं नक्षात्रयोगेषु त्रिषु कर्म समारभेत्।
धर्मार्थ कर्मणामर्थो स्वकर्म फलमश्नुते ।७।

भावार्थ- ऊपर कहे गये धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिये नक्षत्रों के शुभाशुभ फल को देखकर कार्य करने से अपने-अपने कर्मों के फल को मनुष्य स्वयं प्राप्त करता है।

(१५९)

शान्तिमिश्च तथान्य च्चमुपवासैर्व्रतादिभिः।
येऽर्चयन्ति महात्मानं सर्व प्रशमयन्ति ते ।८।

भावार्थ - जो व्यक्ति शान्ति पाठ, व्रत एवं उपवासों की

साधना पूर्वक महात्माओं की पूजा करते हैं उनके सभी दोष शान्त हो जाते हैं।

(१६०)

उपवासैर्गवां दानैस्तर्पणैश्च मनीषिणाम्।
ग्रहनक्षत्रजाः दोषाः प्रशाम्यन्तीह देहिनाम् ।९।

भावार्थ - व्रत व उपवास करने से, गौओं के दान से, ऋषियों के लिये तर्पण करने से अथवा विद्वान ब्राह्मणों को संतुष्ट करने से ग्रह नक्षत्रों से उत्पन्न होने वाले दोष अवश्य ही शान्त हो जाते हैं।

(१६१)

नक्षत्राणि ग्रहाश्चैव देवता पितरो द्विजः ।
पूजिता प्रति पूज्यन्ते निर्दहन्त्यपमानिताः ।१०।

भावार्थ- जो व्यक्ति, ग्रह नक्षत्र, देवता, पितर और ब्राह्मणों की पूजा करता है। संसार में उसकी भी पूजा होती है और यदि इनका अपमान करता है तो ये उसका सर्वनाश कर डालते हैं।

(१६२)

आत्म ज्योतिषमित्युक्तं स्वयंमुक्तं स्वयं भुवा।
तत्वतः पृच्छमानस्य काश्पस्य महात्मनः ।११।

भावार्थ - जब गंभीरता पूर्वक श्री कश्यप जी ने प्रश्न किया तब स्वयं ब्रह्मा जी ने इस आत्मतत्व को प्रकट करने वाले ज्योतिष का वर्णन किया।

य इदं पठते विप्रो विधिवच्च समाहितः।
यथोक्तं लभते सर्वमाम्नायविधिदर्शनात् !१२।१६६।

भावार्थ - जो ब्राह्मण इस अथर्ववेदीय ज्योतिष को ध्यान पूर्वक एवं नियमानुसार पढ़ता है उसे वैदिक विधि का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

- इत्यलम् -

मुद्रक : शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि., झाँसी